DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D·B· COLLEGE JAYNAGAR, BIHAR·
B·A Part-II (HON'S), Paper- IV

BY· DR·A·K·Yadav
(Asstt. Prof. G.P.T.T.)

(Comparative Government and Politics) Date- 21-07-20

Lecture No- 15

तुलनात्मक राजनीति का परम्परावादी उपागम —

पुराने राजनीतिक विचारकों द्वारा तुलनात्मक अध्ययन में अपनायें गये तरीको को परम्परागत उपागम या दृष्टिकोण कहा जाता है। अथवा तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन की परम्परागत विधियों का सम्बन्ध इतिहास, नीतिशास्त्र, दर्शन और विधि की प्रधानता से रहा है। जिसने उस पर परम्परागत उपागमों की छाप लगाई है। प्रारम्भ में परम्परागत उपागमों में विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं के औपचारिक अध्ययन पर बल दिया गया। बाद में ऐतिहासिक कानूनी पद्धतियों की प्रतिक्रियास्वरूप संरूपण पद्धति (Configurative method) को अपनाया गया। कालान्तर में नये राज्यों के फलस्वरूप 'क्षेत्रीय अध्ययन' (Area Studies) पर जोर दिया गया। तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन से सम्बन्धित प्रमुख परम्परागत विधियां इस प्रकार है—

① दार्शनिक विधि (Philosophical method)—

प्लेटो, थामस मूर, रूसो, जे० एस० मिल आदि के द्वारा इस पद्धति को प्रमुख रूप से अपनाया गया है। प्लेटो की 'रिपब्लिक' और थामस मूर की 'यूटोपिया' इस पद्धति के अनुपम उदाहरण है। प्लेटो के द्वारा दार्शनिक शासन और आदर्श राज्य की कल्पना, थामस मूर के स्वर्गिक राज्य की धारणा, लॉक के प्राकृतिक नियम और प्राकृतिक अधिकार की धारणा और रूसो द्वारा सामान्य इच्छा के सिद्धान्त का प्रतिपादन दार्शनिक पद्धति के आधार पर ही किया गया है। इस पद्धति का विशेष गुण यह है कि इसके द्वारा राजनीतिक जीवन के आदर्शों को निश्चित कर राजनीति को नैतिकता के नजदीक लाने का कार्य किया जाता है।

② ऐतिहासिक विधि (The Historical method)

राजनीतिक संस्थाओं का निर्माण नहीं किया जाता वरन् वे विकास का परिणाम होती है। अतः प्रत्येक राजनीतिक संस्था का एक अतीत होता है और उसके अतीत से परिचित होकर ही उसके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया जा

P.T.O.

Scanned with CamScanner

सकता है। इसलिए तुलनात्मक राजनीति के विद्यार्थी के लिए ऐतिहासिक ज्ञान या पद्धति का बहुत अधिक महत्व है। ऐतिहासिक पद्धति की उपयोगिता के कारण अरस्तू के समय से ही इस पद्धति का उपयोग किया जाता रहा है। मार्क्स, मैकियावली, माण्टेस्क्यू, हीगल, कार्ल मार्क्स, स्पेन्सर, आदि ने किसी न किसी रूप में इस पद्धति का उपयोग किया गया है।

③ औपचारिक एवं कानूनी विधि (The formal legal method)—

19वीं सदी में ऐतिहासिक पद्धति के विरुद्ध प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो गयी। इस समय कुछ ऐसे विचारक सामने आये जिन्होंने राजनीतिक संस्थाओं पर विशुद्ध कानूनी दृष्टिकोण से विचार किया। इस पद्धति का सबसे ज्यादा प्रयोग जर्मन विद्वानों ने किया। अमेरिका और इंग्लैण्ड में भी कई ऐसे विधिवेत्ता हुए जिन्होंने कानून और संविधानों को ही राजनीति का विषय क्षेत्र मान लिया था। डायसी की पुस्तक 'Law of the Constitution' तुलनात्मक राजनीति की पाठ्य सूची पर छायी थी। औपचारिक तथा कानूनी आधार पर लिखी गयी अधिकांश पुस्तकें वर्णनात्मक है तथा औपचारिक संस्थाओं व कानूनों के अध्ययन पर बल देती है।

④ संरूपण विधि (The Configurative Approach)—

इस विधि का प्रयोग करने वाले विद्वानों में न्यूमैन, कार्टर, हर्ज, रोशर इत्यादि प्रमुख है। इसमें प्रत्येक राज्य की राज्य की राजनीतिक व्यवस्था को धुरी मानकर उसका अलग से अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन के द्वारा बहुत से आंकड़े तथा अन्य आवश्यक सामग्री एकत्रित करके तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है।

⑤ क्षेत्रीय उपागम (The Area Approach)—

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में क्षेत्रीय उपागम का विशेष रूप से प्रयोग किया जा रहा है। क्षेत्रीय उपागम के आधार अनेक विद्वानों ने विकासशील देशों की राजनीति को अपने अध्ययन का विषय बनाया।

इन सारी विधियों के बावजूद परम्परागत उपागम को अर्थशून्य नहीं कहा जा सकता। परम्परागत अध्ययनों ने इतने राजनीतिक तथ्य संकलित किये कि उनसे बाद में उपयोगी विश्लेषण सम्भव हुए। इन विधियों के माध्यम से राजनीतिक व्यवस्थाओं की जटिलताओं का आभास मिला और राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के लिए नूतन अभिमुखों की आवश्यकता महसूस की गयी।

By - DR. A.K. Yadav
Pol. Sc
(ASSTT Prof - G.P.T.T)

DEPARTMENT of POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR, BIHAR.

DR. A.K. Yadav
ASST. Prof. G.P.T.T

B.A Part-II (HON'S) Paper-IV

Date- 21-07-20

(Comparative Government and Politics)

Lecture No. - 16

तुलनात्मक राजनीति का आधुनिक उपागम —

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद राजनीति के क्षेत्र में नये विश्लेषणों और अध्ययनों की आवश्यकता पड़ी। इसलिए नयी पद्धतियों और दृष्टिकोण की खोज होने लगी। विश्लेषण और परीक्षण की नयी पद्धति और नये दृष्टिकोणों का विकास हुआ। लार्ड ब्राइस और फ्रेडरिक जैसे विद्वानों ने तुलनात्मक राजनीति को नयी दिशा देने की कोशिश की। लेकिन इसके साहित्य का विकास २०वीं सदी के सातवें दशक के वर्षों में ही हुआ। आमण्ड एवं पावेल, लुसियन पाई, सिडनी वर्बा, डेविड ईस्टर आदि आधुनिक विद्वानों ने तुलनात्मक राजनीति को आधुनिक रूप दिया। तुलना के लिए समान सिद्धान्तों व मूल्यों को काम में लाया जाता है। तुलनात्मक राजनीति का आधुनिक दृष्टिकोण अधिक परीक्षण करने वाला, अधिक खोजबीन करने वाला और अधिक व्यवस्थित है। यह अध्ययन राजनीतिक संस्थाओं के मूल में जाने का प्रयास करता है। आधुनिक दृष्टिकोण में हित समूहों, दबाव समूहों, राजनीतिक दलों के विचारधारा से प्रभावित व्यवहारों का विशेष अध्ययन किया जाता है। यह दृष्टिकोण राजनीतिक और अन्य व्यवहारों के बीच वास्तविक सम्बन्धों की खोज करता है। आधुनिक दृष्टिकोण की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं —

(1) यह उपागम वैज्ञानिक तथा व्यवस्थित अध्ययन पर आधारित है। इसमें कार्य-कारण और क्रिया-प्रक्रिया का सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश की जाती है। पहले कुछ परिकल्पनाओं के आधार पर राजनीतिक व्यवस्थाओं का विश्लेषण किया जाता है और सामान्य नियमों के द्वारा उनकी सच्चाई को आंका जाता है और तब निष्कर्ष निकाला जाता है।

(2) चूंकि आज राजनीतिक प्रक्रियाओं और अन्य सामाजिक प्रक्रियाओं में घनिष्ट सम्बन्ध माना जाता है। इसलिए राजनीति का अध्ययन करते समय केवल राजनीतिक पहलू को नहीं बल्कि अन्य सामाजिक पहलुओं को भी ध्यान रखा जाता है।

(3) परम्परागत दृष्टिकोण राजनीतिक संस्थाओं

P.T.O

Scanned with CamScanner

B.A-Part-II (H) Paper-IV
Lecture-No-16

या समस्याओं का केवल वर्णन करता था, न तो वह उनका वैज्ञानिक ढंग विश्लेषण करता था और न ही समस्याओं का समाधान ही खोजता था। लेकिन आधुनिक दृष्टिकोण समस्याओं की व्याख्या करता है, उनका विश्लेषण करता है और समाधान ढूंढने की कोशिश करता है।

(4) आधुनिक दृष्टिकोण व्यवस्थामूलक है। इसमें संविधान की अध्ययन की अपेक्षा राजनीतिक व्यवस्थाओं का अध्ययन अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। राजसत्ता, शक्ति का आधार और शक्ति तत्व इत्यादि की भी अध्ययन बड़ी प्रमुखता से किया जाता है।

(5) आधुनिक पद्धति अंतः अनुशासनात्मक अध्ययन पर अधिक बल देता है। इसमें कोई शक नहीं कि राजनीतिक संस्थाओं पर सामाजिक और आर्थिक तत्वों तथा परिस्थितियों का निर्णायक प्रभाव पड़ता है।

(6) तुलनात्मक राजनीति का आधुनिक दृष्टिकोण संरचनात्मक कार्यमूलात्मक है। इस दृष्टिकोण के अनुसार राजनीतिक संस्थाओं की अध्ययन संरचनाओं और कार्य दोनों के आधार पर किया जाना चाहिए। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था में संरचना और कार्यों में बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। वे एक दूसरे को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं।

(7) आधुनिक तुलनात्मक राजनीति मूल्य-मुक्त राजनीतिक सिद्धांत के निर्माण पर बल देती है। वर्तमान में तुलनात्मक राजनीति के विद्वानों का सरोकार वस्तुओं के आदर्श रूप से न होकर उनके वास्तविक रूप से है।

आधुनिक तुलनात्मक राजनीति के उपयुक्त विशेषताओं से स्पष्ट है कि इसने राजनीतिक व्यवहार के बारे में सुनिश्चित स्पष्टीकरण व व्यवस्था करने का प्रयत्न किया है। इसने तुलनात्मक राजनीति की अनुभववादी अभिरुचि का विस्तार किया तथा अध्ययन के ढंग को परिष्कृत कर उसे अधिक व्यवस्थित एवं परिशुद्ध किया है।

Date- 21-07-20

By- DR. A.K. Yadav
(Asstt Prof G.P.T.T.)
Pol. SC

Scanned with CamScanner